सुदामा चरित

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» भाषा की बात: उच्चारण बदलता है तो शब्द-रूप भी बदलते हैं

प्रश्न 1 (आसान). 'वाणी' किसी जगह 'बानी' की तरह बोला जाए, तो क्या यह नया शब्द है?
उत्तर – नहीं, अर्थ वही रहता है; उच्चारण बदलने से शब्द-रूप बदल गया है।

प्रश्न 2 (आसान). उच्चारण बदलता है तो शब्द-रूप पर आम तौर पर क्या असर पड़ता है?
उत्तर – वर्तनी/शब्द-रूप भी बदलने लगता है।

प्रश्न 3 (मध्यम). पाठ में 'आँखि' लिखा है। आप इसे 'आँख' से कैसे जोड़ेंगे?
उत्तर – वाक्य में 'आँखि' का काम/अर्थ 'आँख' जैसा देखकर समझेंगे; उच्चारण-जन्य रूप है।

प्रश्न 4 (कठिन). मान लो आप 'मन से मनवा, मनुवा' जैसे रूप पढ़ते हो। बिना शब्दकोश के आप कैसे निष्कर्ष निकालोगे कि यह एक ही मूल अर्थ से जुड़े रूप हैं?
उत्तर – पाठ में भाव/काम (जैसे 'मन' से जुड़ाव) एक जैसा देखकर और 'उच्चारण/बोलचाल' से रूप बदलने की बात याद रखकर–इसे उसी मूल शब्द के अलग उच्चारित रूप मानोगे।

» शब्दार्थ से भाव पकड़ना

प्रश्न 5 (आसान). शब्दार्थ 'हाथ' (dj) से पंक्ति में किस तरह का दृश्य समझ आता है?
उत्तर – हाथ से जुड़ी क्रिया–सहारा/इशारा/मदद की जरूरत या हाथ बढ़ाने वाला भाव।

प्रश्न 6 (आसान). 'बैरी' का अर्थ (दुश्मन/विरोधी) समझते ही भाव पर क्या असर पड़ता है?
उत्तर – विरोध और मुश्किल का भाव तेज हो जाता है, पंक्ति भारी लगती है।

प्रश्न 7 (मध्यम). 'ईश्वर... नाम का जप' और 'भक्ति... स्मरण' शब्दार्थ का भाव बताओ–ये सिर्फ जानकारी है या कुछ और?
उत्तर – ये आस्था और भरोसे का भाव बनाता है; व्यक्ति मुश्किल में भी मन को ईश्वर की तरफ टिकाए रखता है।

प्रश्न 8 (कठिन). तुम्हें लगता है कि शब्दार्थ समझने के बाद भी कविता कठिन है। अब तुम कौन-सा 'अगला कदम' करके भाव पकड़ोगे?
उत्तर – शब्द का अर्थ लेकर खुद से पूछोगे: 'इस शब्द से पंक्ति का मूड कैसा बनता है?' फिर उसी टोन में पंक्ति पढ़कर भाव महसूस करोगे।

» सुदामा की दीनदशा देखकर श्रीकृष्ण की मनोदशा

प्रश्न 9 (आसान). 'दीन दसा' सुनकर कविता में सुदामा की कैसी हालत समझ आती है?
उत्तर – संकोच, अभाव और पराधीनता जैसी बेहाली–जिसमें वे मजबूर और शर्माए हुए हैं।

प्रश्न 10 (आसान). श्रीकृष्ण सुदामा की दीनदशा देखकर क्या भाव दिखाते हैं?
उत्तर – करुणा–यानी दिल से दया और पिघलना।

प्रश्न 11 (मध्यम). 'पानी परात को हाथ छुयो नहिं' से यह कैसे समझते हैं कि श्रीकृष्ण का व्यवहार बदल गया?
उत्तर – इससे संकेत मिलता है कि खाना/सामान्य काम से पहले वे सुदामा की पीड़ा को अहम मानते हैं; इसलिए सामान्य क्रिया रुक जाती है।

प्रश्न 12 (कठिन). कविता में 'नैनन के जल सों पग धेए' को अपने शब्दों में लिखिए–यह क्रिया श्रीकृष्ण की मनोदशा कैसे बताती है?

उत्तर – यह क्रिया बताती है कि श्रीकृष्ण सुदामा के दुख को अपना मानकर अंदर से बहुत भावुक हो जाते हैं। वे आँसुओं से चरण धोकर अपनापन, सम्मान और संवेदना प्रकट करते हैं।

» 'पानी परात...' पंक्ति का करुण-भाव

प्रश्न 13 (आसान). 'हाथ छुयो नहिं' से करुण-भाव के बारे में क्या समझ आता है?

उत्तर – श्रीकृष्ण का ध्यान काम से हटकर सुदामा की पीड़ा की तरफ चला जाता है।

प्रश्न 14 (आसान). 'नैनन के जल' का भाव कविता में क्या है?

उत्तर – आँखों का पानी दिखाता है कि श्रीकृष्ण को सच्चा दुःख/तरस हो रहा है।

प्रश्न 15 (मध्यम). इस पंक्ति में दिखावटी उपेक्षा क्यों नहीं मानी जाएगी? 2 कारण लिखिए।

उत्तर – 1) श्रीकृष्ण परात वाले काम में हाथ नहीं लगाते। 2) आँखों में जल आता है और कदम करुणा के साथ बढ़ते हैं–यानी भाव व्यवहार में उतरता है।

प्रश्न 16 (कठिन). 'क्या-क्या' में भावना लिखने का तरीका बताइए: क्या लिखना है और क्या नहीं?

उत्तर – क्या लिखना है: क्रियाओं से निकलने वाला भाव (ध्यान हटना, आँसू, तरस) और यह कि सहानुभूति सच्ची है। क्या नहीं: सिर्फ घटना/तथ्य जैसे 'आँखों में जल आया' बिना कारण-भाव बताए।

» उपालंभ/शिकायत का प्रसंग: 'चोरी की बान' और पृष्ठभूमि

प्रश्न 17 (आसान). 'चोरी की बान' से कवि किस तरह की स्थिति दिखाता है–दंड या छुपाकर लाना?

उत्तर – छुपाकर/अंदर दबाकर लाना।

प्रश्न 18 (आसान). उपालंभ यहाँ किस भाव का रूप है?

उत्तर – टोका-टोकी/शिकायत-सा प्रेमभाव।

प्रश्न 19 (मध्यम). सुदामा को यह उपालंभ क्यों 'उल्टा' डर/लज्जा जैसा लग सकता है?

उत्तर – क्योंकि उन्होंने चीज़/भाव छुपाकर रखा था, इसलिए उनके मन में अपराध-बोध जैसी शर्म आ जाती है।

प्रश्न 20 (कठिन). 'चोरी की बान' को सीधे अपराध मानने की गलती क्यों होगी? इसे प्रेममय टोका-टोकी कैसे समझेंगे?

उत्तर – कविता का उद्देश्य सुदामा को दंडित करना नहीं है; कृष्ण की मंशा समझाने/संभालने की है। 'उपालंभ' शब्द प्रेम के साथ आता है–सुदामा की चिंता को स्पष्ट करके प्रेम से शांत करता है, इसलिए इसे कठोर आरोप नहीं मानना चाहिए।

» द्वारका से खाली हाथ लौटते समय सुदामा के विचार

प्रश्न 21 (आसान). द्वारका से लौटते वक्त सुदामा के मन में मुख्य रूप से क्या चल रहा होता है–खुशी या संदेह?

उत्तर – संदेह और लज्जा–यानी दुविधा।

प्रश्न 22 (आसान). सुदामा को कृष्ण के व्यवहार से खीझ क्यों लगती है?

उत्तर – क्योंकि कृष्ण की बातें/व्यवहार में प्रेम के साथ टोका-टोकी भी होती है, जिससे सुदामा सही अर्थ नहीं समझ पाते।

प्रश्न 23 (मध्यम). सुदामा की मन-दुविधा को 3 बिंदुओं में लिखो: वे किस-किस बात को लेकर परेशान थे?

उत्तर – 1) कृष्ण ने छिपाकर लाया उनका प्रसाद/भाव समझा या नहीं? 2) कहीं कृष्ण को ये 'कम' तो नहीं लगा? 3) कहीं कृष्ण की ओर से नाराज़गी/ठेस न हो जाए।

प्रश्न 24 (कठिन). कृष्ण का उपालंभ (शिकायत जैसा) सुदामा की दुविधा कैसे बढ़ाता है? कविता के आधार पर कारण सहित लिखो।

उत्तर – कृष्ण की 'चोरी की बान' जैसी टोका-टोकी सुदामा को प्रेम का संकेत लगने के बजाय अपने लिए डर/अपराध-भाव जैसा प्रतीत होती है। उन्हें लगता है कि शायद कृष्ण ने उनके छिपे प्रसाद/भाव को वैसा नहीं समझा जैसा वे सोचते थे। इसलिए खाली हाथ लौटने की स्थिति के साथ उनका संदेह और बढ़ता है।

» घर लौटकर झोंपड़ी/सामान न मिलने पर मानसिक उथल-पुथल

प्रश्न 25 (आसान). सुदामा को घर लौटकर झोंपड़ी/सामान न मिले तो मन में सबसे पहले किस तरह का असर होता है?
उत्तर – भ्रम और सवाल उठना कि "ये कहाँ गया?"

प्रश्न 26 (आसान). उथल-पुथल का मतलब सिर्फ रोना नहीं है–इसमें कौन-कौन से तत्व होते हैं?
उत्तर – भ्रम, आश्चर्य और बेचैनी/डर

प्रश्न 27 (मध्यम). द्वारका से लौटते समय सुदामा की चिंता क्या थी, और घर आकर वह चिंता किस तरह बदल जाती है?
उत्तर – उनकी चिंता थी कि कृष्ण ने उनका प्रसाद/भाव स्वीकार किया या नाराज़गी होगी; घर पर झोंपड़ी-सामान न मिलने से यह चिंता नए स्तर का भ्रम और आश्चर्य बन जाती है–वे मानने लगते हैं कि किसी चमत्कार/परिवर्तन का संकेत है।

प्रश्न 28 (कठिन). समझाइए कि झोंपड़ी न मिलने वाला दृश्य कथा में 'चमत्कार' का संकेत कैसे मजबूत करता है, सिर्फ भावनात्मक दुख बताकर नहीं।
उत्तर – कथा पहले संकेत देती है कि कृष्ण का व्यवहार छिपे भाव का अर्थ बदल सकता है। लेकिन घर लौटकर झोंपड़ी/सामान का न मिलना अपेक्षा के बिल्कुल विपरीत है। जब सामान्य चीज़ें ही नहीं मिलतीं, तो इसका कारण 'सिर्फ किस्मत' नहीं रह जाता–दिखता है कि कृष्ण ने कुछ अदृश्य रूप से परिवर्तन कर दिया है। इसलिए वही दृश्य चमत्कार के संकेत को मजबूत करता है और सुदामा के मन को नई सच्चाई की ओर मोड़ता है।

» निधर्नता के बाद संपन्नता का चित्रण

प्रश्न 29 (आसान). 'निधर्नता के बाद संपन्नता' से कविता क्या दिखाना चाहती है?
उत्तर – गरीबी की हालत में बड़ा बदलाव और जीवन-भाव में आराम/स्थिरता का लौटना।

प्रश्न 30 (आसान). क्या यह संपन्नता सिर्फ वस्तुएँ मिलने तक सीमित है?
उत्तर – नहीं, यह मन की स्थिरता और भक्ति का फल–दोनों दिखाती है।

प्रश्न 31 (मध्यम). कविता का भावार्थ लिखिए: संपन्नता क्यों आती है और इसका संदेश क्या है?
उत्तर – संपन्नता कृष्ण की कृपा से आती है, क्योंकि सुदामा का भक्ति-भाव स्वीकार होता है; संदेश यह है कि विश्वास और भक्ति का फल देर से सही, मिलता है।

प्रश्न 32 (कठिन). सुदामा की पिछली मनोदशा (खाली हाथ लौटने पर) और अंत की संपन्नता को जोड़कर 5-6 पंक्तियों में बताइए कि कहानी का बदलाव किस तरह 'चमत्कार' जैसा लगने लगता है।
उत्तर – खाली हाथ लौटने पर मन में टूटन, डर और संशय होता है। पर अंत में परिस्थितियाँ बदलती हैं और आराम/स्थिरता आती है, जिससे पता चलता है कि कृष्ण ने उनके भाव को सच में स्वीकार किया है। इसलिए यह बदलाव सिर्फ घटनाओं का उलटफेर नहीं, भक्ति का फल दिखाने वाला 'चमत्कार' जैसा अनुभव बन जाता है।

» अनुमान और कल्पना: वर्षों बाद मित्र से मिलने का अनुभव

प्रश्न 33 (आसान). बहुत साल बाद दोस्त मिलने पर तुम्हें पहला भाव क्या आएगा और क्यों?
उत्तर – पहला भाव झिझक/संकोच होगा, क्योंकि इतने साल बाद रिश्ते में बदलाव का डर रहता है।

प्रश्न 34 (आसान). दोस्त को देखकर खुशी क्यों होती है?
उत्तर – क्योंकि पुरानी यादें और दोस्ती का भरोसा तुरंत याद आ जाता है।

प्रश्न 35 (मध्यम). जब दोस्त का हाल पूछो, तो तुम्हारे मन में कौन सा भाव होगा? एक कारण लिखो।
उत्तर – देखभाल/अपनापन का भाव होगा, क्योंकि दोस्ती निभाना सिर्फ खुशियों में नहीं बल्कि उसके जीवन की चिंता में भी दिखता है।

प्रश्न 36 (कठिन). मान लो दोस्त पहले जैसा नहीं लगा (थोड़ा बदला हुआ है)। फिर भी तुम दोस्ती कैसे निभाओगे? अपने भाव और कारण लिखो।

उत्तर – मेरे मन में थोड़ी चिंता और संवेदनशीलता होगी, कारण कि समय ने उसे बदला होगा। फिर मैं बिना ताने समझदारी से उसकी बात सुनूँगा, क्योंकि सच्ची दोस्ती पहचान से ज्यादा अपनापन समझने से बनती है।

» दोहे के आधार पर सच्ची मित्रता की समानता

प्रश्न 37 (आसान). 'सच्चा दोस्त' की पहचान किस समय में सबसे साफ दिखती है?

उत्तर – विपत्ति (मुश्किल समय) में।

प्रश्न 38 (आसान). दोहे में 'मीत' का अर्थ क्या है?

उत्तर – दोस्त (मित्र)।

प्रश्न 39 (मध्यम). दोहे के विचार से सुदामा चरित में समानता कैसे लिखोगे? (एक कारण लिखो)

उत्तर – कमी/कठिन समय में भक्ति और साथ निभना ही मित्रता की असली पहचान दिखाता है।

प्रश्न 40 (कठिन). 'सिर्फ सुख में साथ' और 'विपत्ति में साथ'–इनमें कौन-सी बात सच्ची मित्रता के दोहे से मेल खाती है? सुदामा चरित के संदर्भ में 4-5 पंक्तियाँ लिखो।

उत्तर – विपत्ति में साथ, क्योंकि दोहा कहता है कि कसौटी वही समय है। सुदामा चरित में साधन/सहारा की कमी के बावजूद सच्ची भक्ति है और कृष्ण का साथ मित्रता को परखकर असली बनाता है। इसलिए संकट में टिकना ही सच्ची मित्रता है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. किसी पाठ में "ग्यान" लिखा है। आपको लगे कि यह "ज्ञान" से अलग शब्द है। आप कैसे पहचानेंगे कि दोनों में अर्थ का रिश्ता है?

› पहले ध्यान दो: क्या वाक्य में "ग्यान" का काम वही है जो "ज्ञान" का होता है (जैसे समझ/बुद्धि/विद्या)?

› अब ध्यान दो: क्या पाठ में अर्थ-भाव एक जैसा बन रहा है?

› फिर समझो: इलाके/बोलचाल में उच्चारण बदलने से 'ज्ञान' का रूप 'ग्यान' जैसा दिख सकता है।

› मतलब: यह शब्द नया नहीं, उसी शब्द का बदला उच्चारित-रूप है–इसलिए दोनों को अर्थ की तरफ से जोड़ा जा सकता है।

उत्तर – अगर वाक्य में 'ग्यान' वही अर्थ दे रहा है जो 'ज्ञान' देता है, तो उसे 'ज्ञान' का उच्चारण-जन्य शब्द-रूप मानो–अर्थ वही है, बस वर्तनी/रूप अलग है।

उदाहरण 2. कविता की एक पंक्ति में 'गारी' शब्द आया है। मान लो शब्दार्थ में 'गारी = गाली, अपशब्द' दिया है। बताओ–इस शब्दार्थ से पंक्ति का भाव कैसा बनता है?

› पहले 'गारी' का शब्दार्थ पढ़ो: 'गाली, अपशब्द'।

› अब सोचो, जब किसी के लिए गाली/अपशब्द बोले जाएँ तो इंसान कैसा महसूस करता है–चोट, अपमान, दुख।

› फिर पंक्ति को उसी भाव के साथ पढ़ो–भारीपन/दर्द की टोन में।

उत्तर – इस शब्दार्थ से भाव बनता है कि सामने वाला अपमान/दुख झेल रहा है, इसलिए पंक्ति का स्वर दर्द और चोट वाला लगेगा।

उदाहरण 3. कविता की पंक्तियाँ 'देखि सुदामा की दीन दसा, करुना करिवैफ करुनानिध् िरोए।' और 'पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धेए।' के आधार पर लिखिए कि सुदामा की दीनदशा देखकर श्रीकृष्ण की मनोदशा कैसी हुई और इसका क्या प्रभाव पड़ा?

› पहले सुदामा की हालत समझो: संकोच + अभाव + पराधीनता (कविता में वही 'दीन दसा' है)

› फिर श्रीकृष्ण के भाव को पकड़ो: 'करुणा'–यानी दिल में दया/द्रवित होना

› अब प्रभाव लिखो: 'पानी परात को हाथ छुयो नहिं' से संकेत मिलता है कि सामान्य काम से पहले भावनात्मक सहारा आता है

› अंत में एक क्रिया लिखो: 'नैनन के जल सों पग धेए'–आँसुओं से पग धोकर अपनापन और सहानुभूति दिखती है

उत्तर – सुदामा की दीनदशा देखकर श्रीकृष्ण की मनोदशा करुणामय और संवेदनशील हो जाती है। वे सुदामा के अपमान/दुख को तुरंत महसूस करते हैं, इसलिए सामान्य परंपरागत तैयारी भी पीछे हो जाती है और वे भावनात्मक रूप से उनका सहारा देते हैं। 'नैनन के जल सों पग धेए' से स्पष्ट है कि श्रीकृष्ण अपने आँसुओं के साथ सुदामा के चरणों के प्रति आत्मीयता और गहरी सहानुभूति प्रकट करते हैं।

उदाहरण 4. कविता की पंक्ति 'पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धेए' के आधार पर 3-4 पंक्तियों में करुण-भाव अपने शब्दों में लिखिए।

› पहली क्रिया पहचानो: 'हाथ छुयो नहिं' यानी काम के प्रति लापरवाही नहीं, ध्यान का हट जाना

› दूसरी क्रिया पहचानो: 'नैनन के जल' यानी आँखों का पानी, यानी सच्ची संवेदना

› इन दोनों से कारण/भाव निकालो: सुदामा की पीड़ा देखकर श्रीकृष्ण का मन पिघल जाता है

› अंत में व्यवहार का निष्कर्ष लिखो: वे दिखावा नहीं, वास्तविक सहानुभूति दिखाते हैं

उत्तर – 'पानी परात को हाथ छुयो नहिं' से पता चलता है कि श्रीकृष्ण काम छोड़कर सुदामा के दुःख को महसूस करते हैं। 'नैनन के जल सों पग धेए' में उनकी आँखों से आँसू बहते हैं, मानो दिल करुणा से भर गया हो। इसलिए उनका व्यवहार दिखावटी नहीं, सच्ची सहानुभूति वाला है–वे सुदामा की पीड़ा को अपने हृदय में ले लेते हैं और उसी भाव के साथ कदम बढ़ाते हैं।

उदाहरण 5. कविता के भाव के आधार पर लिखो: 'चोरी की बान' वाली बात किस प्रसंग से जुड़ती है, और वह किसका उपालंभ/शिकायत-सा भाव बनकर आती है?

› पहले तय करो–'चोरी की बान' शब्द किस व्यवहार-स्थिति की ओर इशारा करता है: छुपाकर/भीतर दबाकर लाना।

› फिर जोड़ो–यह व्यवहार सुदामा के कृष्ण के पास आने और अपने साथ कुछ लाने वाले प्रसंग से मेल खाता है।

› अब समझो–उपालंभ का अर्थ दंड नहीं; यह टोका-टोकी है, जो प्रेम के साथ आती है।

› अंत में लिखो–यह शिकायत-सा भाव कृष्ण की वाणी/कृष्ण-भाव से जुड़ता है, जो सुदामा की लज्जा को समझकर उसे संभालता है।

उत्तर – 'चोरी की बान' सुदामा के छुपाकर/भीतर दबाकर लाए हुए द्रव्य-प्रसाद वाले प्रसंग से जुड़ती है। यह दंड जैसा नहीं, बल्कि कृष्ण द्वारा सुदामा को समझाते/टोका-टोकी के रूप में दिया गया उपालंभ-सा प्रेमभाव है; इसमें सुदामा की लज्जा और चिंता को प्रेम से शांत करने की पृष्ठभूमि है।

उदाहरण 6. द्वारका से खाली हाथ लौटते समय सुदामा मार्ग में क्या-क्या सोचते जा रहे थे? कृष्ण के व्यवहार से उन्हें क्यों खीझ लग रही थी और उनकी मन-दुविधा क्या थी–अपने शब्दों में क्रम से लिखिए।

› पहले कारण लिखो: कृष्ण के व्यवहार में मिठास भी है और टोका-टोकी भी–इससे सुदामा का अर्थ समझ में नहीं आता।

› फिर सुदामा का मुख्य शक लिखो: उन्होंने जो प्रसाद/भाव छिपाकर लाया था, क्या कृष्ण ने उसे स्वीकार किया या उसे 'कम' समझ लिया?

› फिर लज्जा/चिंता: सुदामा को लगता है लोग/कृष्ण उनका भीतर वाला प्रेम नहीं देख पा रहे होंगे।

› फिर डर बढ़ाओ: "खाली हाथ" लौटने की स्थिति से उनका मन सोचता है कि कहीं उनकी मित्रता पर कोई ठेस न लग गई हो।

› अंत में निष्कर्ष: इस सबके बीच सुदामा के अंदर प्रेम है, पर संदेह उन्हें खीझ भी देता है–यही उनकी दुविधा है।

उत्तर – द्वारका से लौटते समय सुदामा सोचते जा रहे थे कि कृष्ण का व्यवहार उनके लिए दया है या फिर किसी बात की टोका-टोकी। उन्हें खासकर यह दुविधा होती है कि उन्होंने जो छोटा-सा प्रसाद/भाव छिपाकर लाया था, क्या कृष्ण ने उसे ठीक से समझा और स्वीकार किया होगा, या उसे 'कम' मानकर कुछ नाराज़गी तो नहीं हो गई? सुदामा की लज्जा भी बढ़ती है–उन्हें लगता है कहीं उनकी मित्रता का उद्देश्य कम रह गया तो कृष्ण को बुरा न लग जाए। इसी संदेह और डर के साथ "खाली हाथ" लौटने का विचार उन्हें और परेशान करता है। इसीलिए उनकी मनोदशा में प्रेम भी है और खीझ भी–दोनों साथ चलते हैं; यही दुविधा है।

उदाहरण 7. सुदामा अपने गाँव लौटते हैं और झोंपड़ी/अपना सामान नहीं पाते। कविता के आधार पर बताइए–उनके मन में किस तरह की उथल-पुथल हो रही होगी, और यह उथल-पुथल कथा में बदलाव/चमत्कार का संकेत कैसे बनती है?

› पहले पहचानो: झोंपड़ी/सामान न मिलना सुदामा की 'उम्मीद' को सीधा चोट देता है।

› फिर उथल-पुथल के तीन संकेत लिखो: भ्रम ("यह कहाँ है?"), आश्चर्य ("ये क्या हो गया?"), और डर/संदेह ("कहीं गलत तो नहीं?")।

› अब कारण-खोज लिखो: वे कृष्ण के व्यवहार/उपहार के 'मतलब' को जोड़कर सोचने लगते हैं।

› अंत में चमत्कार का निष्कर्ष: जब सामान्य स्थिति नहीं मिलती, तो समझ आता है कि कोई अदृश्य परिवर्तन हुआ है–कथा का बदलाव इसी जगह मजबूत होता है।

उत्तर – झोंपड़ी/सामान न मिलते ही सुदामा का मन भ्रम, आश्चर्य और चिंता में फँस जाता है। उनके दिमाग में बार-बार सवाल घूमते हैं–"मेरी चीज़ें कहाँ गईं? ये उल्टा क्या हो गया?" वे द्वारका में कृष्ण के व्यवहार को याद करके कारण ढूँढते हैं। क्योंकि घर की सामान्य स्थिति उनके हिसाब से नहीं मिलती, इसलिए उनका मन धीरे-धीरे यही संकेत पकड़ता है कि कृष्ण ने उनके भाव/प्रसाद को चमत्कार की तरह स्वीकार कर किसी परिवर्तन का रास्ता खोल दिया–यही कथा में बदलाव का मजबूत संकेत बनता है।

उदाहरण 8. कविता की अंतिम पंक्तियों में 'निधर्नता के बाद मिलनेवाली संपन्नता' का चित्रण आता है। उसे अपने शब्दों में लिखिए और बताइए कि इसका भावार्थ क्या संदेश देता है।

› पहले सुदामा की दीनता/गरीबी वाली स्थिति लिखो (मन में दुख, नींद/आराम का अभाव जैसा भाव)

› फिर अंत में आने वाली संपन्नता बताओ (जीवन-परिस्थिति बदलती है, आराम/स्थिरता का अनुभव होता है)

› स्पष्ट करो कि यह संपन्नता सिर्फ दिखावा नहीं, कृष्ण की कृपा और भक्ति का फल है

› अंतिम 1-2 लाइन में भावार्थ लिखो: विश्वास और भक्ति का परिणाम देर से सही, आता है

उत्तर – कविता में पहले सुदामा की दीन दशा दिखाई गई है–ऐसी स्थिति जहाँ मन/जीवन में कष्ट है और आराम नहीं मिलता। फिर बाद में वही परिस्थितियाँ बदलकर संपन्नता का चित्र सामने आता है, जैसे अब जीवन में नींद, आराम और स्थिरता लौट आई हो। इस संपन्नता का असली अर्थ यह है कि कृष्ण की कृपा सुदामा के भक्ति-भाव को स्वीकार करती है; इसलिए यह धन का दिखावा नहीं, भक्ति का फल और विश्वास की जीत का संदेश है।

उदाहरण 9. कल्पना कीजिए कि आपका कोई अभिन्न मित्र बहुत वर्षों बाद आपसे मिलने आता है। अनुमान लगाइए और कल्पना करके लिखिए–मिलते समय आपके मन में कौन-कौन से भाव आएँगे? उन भावों के कारण भी लिखिए।

› पहले मुख्य भाव चुनो: खुशी, झिझक/संकोच, और भावुकता

› हर भाव के साथ कारण जोड़ो: सालों की दूरी, पुरानी यादें, दोस्ती का भरोसा

› एक छोटा-सा दृश्य लिखो: हाथ मिलाना/गले लगाना/चुप हो जाना

› अंत में बताओ कि आप दोस्त का ख्याल कैसे रखोगे

उत्तर – बहुत वर्षों बाद जब मेरा अभिन्न मित्र मुझसे मिलने आएगा, तो पहले तो मेरे मन में खुशी के साथ थोड़ी-सी झिझक होगी। कारण ये कि इतने समय बाद चेहरा वही होगा, पर दोस्ती की गर्माहट में दूरी आ गई होगी–इसलिए मैं पहले उसकी तरफ देखता रहूँगा। फिर पुरानी यादें जैसे ही सामने आएँगी, मेरी खुशी और भावुकता बढ़ जाएगी। कारण ये कि हमने साथ जो अच्छे पल बिताए थे, वे याद आते ही दिल भर आता है। मैं उसे गले लगाने की कोशिश करूँगा और उसके बारे में–कहाँ रहा, कैसे है–पूछूँगा, क्योंकि मेरे लिए दोस्ती सिर्फ मिलना नहीं, हाल-चाल लेना भी है। मिलने के शुरुआती कुछ सेकंड शायद हम दोनों चुप भी हो जाएँ, क्योंकि इतनी बड़ी खुशी के साथ शब्द कम पड़ जाते हैं।

उदाहरण 10. रहीम के दोहे–'विपति कसौटी जे कसे तेई साँचे मीत'–के आधार पर 'सुदामा चरित' में सच्ची मित्रता/भक्ति की समानता लिखिए। साथ में यह भी लिखिए कि यह बात विपत्ति में कैसे सिद्ध होती है।

› दोहे का अर्थ एक वाक्य में लिखो: विपत्ति के समय दोस्त असली साबित होता है।

› सुदामा चरित से वह बात चुनो जो 'विपत्ति/कमी' दिखाती है (धन/सहारा की कमी और भक्ति का समय)।

› समानता बनाओ: सुदामा की भक्ति और कृष्ण का साथ–दिखावे से नहीं, कठिन समय में टिके रहने से असली मित्रता बनती है।

› 'क्यों' जोड़ो: इसलिए असली मित्रता वही है जो संकट में साथ दे।

उत्तर – रहीम के दोहे का भाव है कि विपत्ति के समय ही सच्चे दोस्त की पहचान होती है। सुदामा चरित में यही समानता

दिखती है, क्योंकि सुदामा के पास दिखाने लायक साधन नहीं थे–पर उनकी भक्ति सच्ची थी। विपत्ति/कमी के समय भक्ति और मित्रता की कसौटी परखा जाने लगता है, और कृष्ण का साथ मित्रता को असली रूप देता है। इसलिए 'विपत्ति कसौटी' वाले विचार के आधार पर कहा जा सकता है कि सुदामा चरित में सच्ची मित्रता/भक्ति वही बनती है जो कठिन समय में टिके–दिखावे में नहीं।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

- पढ़ते समय अर्थ देखें; रूप अलग होने पर भी उसी मूल शब्द से जोड़ें।
- बोर्ड में अक्सर 'भाव स्पष्ट कीजिए' में शब्दार्थ का सही भाव लिखना फायदेमंद होता है।
- उत्तर में 'करुणा' के साथ 'व्यवहार/क्रिया' (आँसुओं से पग धोना) जरूर लिखो।
- भाव लिखो: क्रिया (हाथ/आँसू) + कारण (सुदामा की पीड़ा) + निष्कर्ष (सच्ची सहानुभूति)।
- 'चोरी की बान' को अपराध नहीं–भक्ति/लज्जा-प्रेम संदर्भ में लिखो।
- बोर्ड में दुविधा लिखते वक्त "किस वजह से" जरूर जोड़ो।
- उत्तर में सिर्फ 'दुख' नहीं–'भ्रम/आश्चर्य' और 'चमत्कार का संकेत' जरूर लिखो।
- अंतिम पंक्तियाँ लिखते समय 'मन की स्थिरता' और 'कृपा-भक्ति का फल' जरूर जोड़ना।
- उत्तर 4-5 लाइनों में: भाव लिखो, फिर "क्यों" जरूर जोड़ो।
- उत्तर में 'दोहे का अर्थ' + 'सुदामा चरित का उदाहरण' + 'क्यों' लिखना ज़रूरी है।

एक नज़र में रिवीज़न

› उच्चारण बदला रूप/वर्तनी भी बदली
› अर्थ देखो मूड/भाव पकड़ो टोन में पढ़ो।
› दीन-दशा करुणा तुरंत संवेदना भरा व्यवहार
› परात रुका, आँसू निकले–करुणा सच्ची
› उपालंभ = टोका-टोकी, 'चोरी' = छुपकर लाने का भाव।
› कृष्ण की 'टोका' = दुविधा बढ़ती है
› - झोंपड़ी न मिले भ्रम, आश्चर्य, डर; चमत्कार का संकेत
› - दीनता संपन्नता: मन में आराम, भक्ति का फल
› - भाव + कारण + छोटा दृश्य (यही फॉर्मूला)
› विपत्ति में परख = सच्ची मित्रता